B.A Part-3 Psy. Paper-7 Study material during lockdown by **Dr. Prabha Shree**
(Guest Faculty, Psychology deptt. Vaishali Mahila College, Hajipur**) 18.05.2020**

मनोवैज्ञानिक परीक्षण (Psychological Test)

मनोवैज्ञानिक परीक्षण के अर्थ

नैदानिक मूल्यांकन में मनोवैज्ञानिक परीक्षणों की भूमिका सबसे अधिक महत्वपूर्ण बतलाई गई है। मनोवैज्ञानिक परीक्षण शाब्दिक या अशाब्दिक अनुक्रियाओं या अन्य व्यवहारों द्वारा संपूर्ण व्यक्तित्व के एक या एक से अधिक पहलुओं को वस्तुनिष्ठ रूप से मापने का एक मानकीकृत उपकरण (standardized instrument) है।

Cornbach (1965) के अनुसार , " परीक्षण व्यक्ति के व्यवहारों को प्रेक्षण करने तथा उसे एक संख्यात्मक मापनी या श्रेणी पद्धति द्वारा वर्णन करने की एक क्रमबद्ध कार्य-विधि है"

Anastasi (1968) के अनुसार, " एक मनोवैज्ञानिक परीक्षण मूल रूप से व्यवहारों के प्रतिदर्श का वस्तुनिष्ठ एवं मानकीकृत माप है"।

इन परिभाषाओं से स्पष्ट है कि psychological test के दो प्रमुख सामान्य गुण होते हैं-

- मनोवैज्ञानिक परीक्षण प्रायः एक वस्तुनिष्ठ मानकीकृत माप (objective standardized measure) होता है। इसका मतलब यह हुआ कि मनोवैज्ञानिक परीक्षण एकांश विश्लेषण (item analysis) , विश्वसनीयता (reliability), वैधता (validity) तथा मानक (norms) आदि गुणों से युक्त होता है। शायद यही कारण है कि इसमें वस्तुनिष्ठता (objectivity) का गुण होता है।
- मनोवैज्ञानिक परीक्षण दो या दो से अधिक व्यक्तियों की तुलना व्यक्ति के किसी एक या अनेक पहलुओं पर किसी अंकिक मापनी (numerical scale) या श्रेणी प्रणाली (category system) द्वारा करने में मदद करता है।

  एक उत्तम मनोवैज्ञानिक परीक्षण में कम से कम अन्य बातों के अलावा वस्तुनिष्ठता (objectivity), विश्वसनीयता (reliability), वैधता (validity) एक मानक (norms) के गुण अवश्य ही होते हैं। नैदानिक

मनोवैज्ञानिक ऐसे परीक्षणों को नैदानिक मूल्यांकन के रूप में प्रयोग करने के पहले इन गुणों पर उनकी परख कर लेते हैं।

नैदानिक मनोवैज्ञानिकों द्वारा सर्वाधिक प्रयोग में लाए जाने वाले कुछ मनोवैज्ञानिक परीक्षण हैं-

- बुद्धि परीक्षण,
- अभिक्षमता परीक्षण,
- मस्तिष्कीय क्षति मापने का परीक्षण,
- व्यक्तित्व परीक्षण।

मनोवैज्ञानिक परीक्षण का निदानसूचक अनुप्रयोग (Diagnostic Uses of Psychological Test)

नैदानिक मूल्यांकन में मनोवैज्ञानिक परीक्षणों की अहमियत काफी रही है। मनोवैज्ञानिक परीक्षण के Diagnostic use इस प्रकार है-

- मनोवैज्ञानिक परीक्षणों के प्रयोग से नैदानिक मनोवैज्ञानिकों को रोगी की बौद्धिक क्षमता, प्रमुख व्यक्तित्व विकृतियों, मस्तिष्कीय क्षति, उनका रुझान आदि के स्तर का पता चल जाता है। इसका परिणाम यह होता है कि उन्हें अपने प्राप्त आंकड़ों के आधार

पर रोग की पहचान करने तथा उनके लक्षणों के स्वरूप को समझने में काफी मदद मिलती है।

- मनोवैज्ञानिक परीक्षणों से रोगी के बारे में जो तथ्य या सूचना मिलते हैं, उनमें वैधता तथा निर्भरता अधिक होती है क्योंकि ऐसे परीक्षण मानकीकृत होते हैं।
- मनोवैज्ञानिक परीक्षणों के माध्यम से नैदानिक मूल्यांकन करना इसलिए आसान होता है क्योंकि इसमें साक्षात्कार के समान रोगी को किसी अप्रिय एवं चिंता उत्पन्न करने वाले परिस्थिति का सामना नहीं करना पड़ता है खासकर जब प्रक्षेपण परीक्षणों (projective tests) का उपयोग किया जाता है तो रोगी को यह पता भी नहीं चलता है कि उसके द्वारा दिए गए अनुक्रियाओं के अर्थ क्या होंगे। फलतः नैदानिक मनोवैज्ञानिक को जो तथ्य प्राप्त होते हैं, वे वास्तविक होते हैं और उनके आधार पर किया गया नैदानिक मूल्यांकन की निर्भरता अधिक होती है।

- मनोवैज्ञानिक परीक्षणों द्वारा नैदानिक मनोवैज्ञानिक को न केवल diagnosis में ही बल्कि psychotherapy में भी काफी मदद मिलती है।
- मनोवैज्ञानिक परीक्षणों की उपयोगिता ना केवल नैदानिक मनोवैज्ञानिकों के लिए ही है बल्कि मनोरोगविज्ञानियों (psychiatrists) के लिए भी काफी है। मनोवैज्ञानिक परीक्षणों में विशेषकर brain damage का मूल्यांकन करने वाले मनोवैज्ञानिक परीक्षणों के नैदानिक उपयोगिता मनोरोगविज्ञानियों के लिए काफी बतलाई गई है क्योंकि रोगी में brain damage की मात्रा कम रहने पर इनका मेडिकल परीक्षण जैसे एक्स-रे तथा EEG विधि उस क्षति की पहचान करने में असमर्थ रह जाता है और ऐसी परिस्थिति में रोगी पर मनोवैज्ञानिक परीक्षणों का क्रियान्वयन आवश्यक हो जाता है क्योंकि यही ऐसा परीक्षण है जिसके माध्यम से कम मात्रा में हुए मस्तिष्कीय क्षति की भी पहचान की जा सकती है।

स्पष्ट हुआ कि psychological tests के नैदानिक उपयोगिता काफी ठोस है जिसके कारण नैदानिक मूल्यांकन करने में इसकी उपेक्षा नहीं की जा सकती है।